MUNTAKHABAT-I-HINDI, OR, SELECTIONS IN HINDUSTANI, WITH VERBAL TRANSLATIONS IN PARTICULAR VOCABULARIES, AND A GRAMMATICAL ANALYSIS OF SOME PARTS, FOR THE USE OF STUDENTS OF THAT LANGUAGE. VOL. II

Published @ 2017 Trieste Publishing Pty Ltd

ISBN 9780649387106

Muntakhabat-i-hindi, or, selections in Hindustani, with verbal translations in particular vocabularies, and a grammatical analysis of some parts, for the use of students of that language. Vol. II by John Shakespear

Except for use in any review, the reproduction or utilisation of this work in whole or in part in any form by any electronic, mechanical or other means, now known or hereafter invented, including xerography, photocopying and recording, or in any information storage or retrieval system, is forbidden without the permission of the publisher, Trieste Publishing Pty Ltd, PO Box 1576 Collingwood, Victoria 3066 Australia.

All rights reserved.

Edited by Trieste Publishing Pty Ltd.
Cover @ 2017

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, re-sold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior consent in any form or binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

www.triestepublishing.com

JOHN SHAKESPEAR

MUNTAKHABAT-I-HINDI, OR, SELECTIONS IN HINDUSTANI, WITH VERBAL TRANSLATIONS IN PARTICULAR VOCABULARIES, AND A GRAMMATICAL ANALYSIS OF SOME PARTS, FOR THE USE OF STUDENTS OF THAT LANGUAGE. VOL. II

Trieste

S 527m

MUNTAKHABĀT-I-HINDĪ,

OR,

SELECTIONS IN HINDUSTANI,

WITH

VERBAL TRANSLATIONS OR PARTICULAR VOCABULARIES,

AND A

GRAMMATICAL ANALYSIS OF SOME PARTS,

FOR

THE USE OF STUDENTS OF THAT LANGUAGE.

By JOHN SHAKESPEAR.

FOURTH EDITION.

VOL. II.

LONDON:

PRINTED FOR THE AUTHOR,

By J. & H. COX, 74 & 75, Great Queen Street, Lincoln's-Inn Fields;

And sold by Wm. H. ALLEN & Co., Booksellers to the Hon. East-India Company, Leadenhall Street.

1844.

ADVERTISEMENT.

In the description of India, which occupies a considerable portion of these Selections, a few names of places have, on the authority of the خلاصة التواريخ been written differently from what they are in the آرايش محفل: and such uncertainty exists with respect to the reading of some names of places, and a few other provincial words, which have occurred in the Arabic characters without points only, that they are necessarily retained, as found, void of the orthographical marks to define the exact pronunciation of them. But, the like uncertainty with respect to the orthography of many proper names must continue to exist in all local descriptions of India, till, through the well-directed attention of individuals or care of Government, the correct reading of them is ascertained, and is denoted in characters which, like the Nagari for instance, admit not of ambiguity. The indulgence of the reader is appealed to, to correct and to excuse the following errors or failures in the impression :—

NAGARI CORRECTIONS.

सफ़्ह़:	सत्र्	ग़लत़	सही़ह़	सफ़्ह़:	सत्र्	ग़लत़	सही़ह़
१	२	म	में	२६	१	म	में
१	६	आम्`	आम्रे	२६	३	ह	है
१	१६	कमरा	कमेरा	२६	१०	ह	है
२	१२	किस् :	किस्म:	२७	१	मँ	में
३	१७	राडा	राजा	२८	१०	ह	है
५	११	हैं	है	२८	११	ह	है
५	१४	मुष्क	मुष्कें	२९	१३	म	में
५	२०	ह	हैं	२९	१७	दंउवत	दंडवत
८	१७	भज	भेज	३०	२	म	मे
११	१३	ह्सरे	दूसरे	३०	२०	दोना	दोनो
१६	३	अपन	अपने	३०	२२	गय	गये
१६	११	ओर	और	३२	१	ह	हैं
१७	१८	परफ़	तरफ़	३२	५	म	मैं
१८	१४	म	मे	३४	३	म	में
१९	५	गन्धर्वमन	गन्धर्वसेन	३४	१४	ल	ले
१९	२१	पृथ्वो	पृथ्वी	३४	१५	म	मे
२१	१	म	मे	३४	२१	म	मे

CORRECTIONS.

صفحه	سطر	غلط	صحیح
۴	۳	بلِين	بلِين
۱۰	۷	گبهوڙون	گبهوڙون کِي
۱۳	۱۶	مُتَوَطِن	مُتَوَطِن
۱۷	۹	گُلزارِ	گُلزارِ
۳۶	۱۵	سالْوي	مالْوي
۵۷	۱۴	تلفُظ	تلفُظِ
۶۱	۷	صَحْرائِي	صَحْرائِي
۶۳	۹	کلان	کلانِ
۸۶	۱	مِثلاً	مَثَلاً
۸۸	۱۵	مِثلاً	مَثَلاً
۱۰۷	۱	سطَحِ	سطَحِ
۱۱۱	۹	خلِيج	خلِيج
۱۱۷	۷	مُعرِف	مُعرَّف
۱۱۹	۱۵	بنْدرِدِيو	بنْدرِدِيو
۱۳۳	۴	بکْرِيون	بکْرِيون

صفحه	سطر	غلط	صحیح
۱۲۶	۱۰	کَجَبهِ	کُجَبهِ
۱۲۷	۱۶	سنْدَه	سِنْدَه
۱۳۸	۱۵	بمرتبه	بمرتبه
۱۴۱	۱۴	وظِيفي	وظِيفي
۱۴۳	۱۵	کاؤن	گاؤن
۱۴۹	۱۴	مشکين	مُشَکين
۱۶۵	۱۶	بِهي	بِهي
۱۷۳	۴	مُشْرف	مُشَرف
۱۷۳	۵	عتابين	عُقابين
۱۷۴	۱۵	رکَهه کرتي	رکَهه کر
۱۷۶	۱۳	دغلي§	وغلي
۱۸۴	۹	مُواليان	مَوَاليان
۱۸۵	۴	باتِ	بابِ
۱۸۶	۳	کيا	کِيا
۱۹۱	۱۳	بهلو	بهلو

यिह कहानी इन्तिख़ाब की गई है सिंहासन बत्तीसी में से।

राजाओं में एक राजा भोज उज्जैन नगरी का राजा था बड़ा बली और बड़ा धनी जस धर्म उस में सब था जितने लोग उस के राज में बस्ते थे सब चैन कर्ते थे राजा राज प्रजा सुखी किसी को कोई दुख नहीं दे सक्ता था यिह न्याव उस के था जो बाघ बक्री एक घाट पर पानी पीते थे और सब उस के आसे मे जीते थे ख़ुदा ने जब से उसे दुन्या के पर्दे पर उतारा सब बेसहारों का किया सहारा और हुस्न उस का देख कर चौधवीं रात के चान्द को चकाचौंध आती थी बड़ा चतुर सुघड़ गुणी था अच्छी अच्छी जित्नी बातें थीं सब उस में समाई थीं भलाई उस की सब जग में मशहूर थी और नगरी उस की यिह बसी थी जो चप्पा रखने को जगह नहीं मिल्ती थी॥

वुह भरा भरा नगर शादियां घर घर नये नये तौर के अच्छे अच्छे मकान बने हुए चौपड़ का बाज़ार दर्मियान नहर बहती हुई दुरस्तः दूकानों में एक एक उन में दूकान दार सर्राफ़ बज़्ज़ाज़ सौदागर कारीगर सुनार लुहार साद: कार कसेरा पटुआ किनारी बाफ़ कोफ़्तगर जिलाकार आईनः साज़ अपने अपने काम में सर गर्म था॥

जौहरी बाज़ार में जवाहिर से किश्तियां भरी हुई मोती मूंगा ज़ुमुर्रुद लअ्ल याक़ूत नीलम पुख़राज जौहरी देखते भाल्ते और ख़रीदारों से बाज़ार का बाज़ार भरा हुआ और उस के बराबर दूकानों में मेवः फ़रोश बिलायती अनार सेब बिही नाशपाती अंगूर

मे पिटारे पिटारियां भर कर लगाये हुए और ढेर छुहारे पिस्ते बादामों के किये हुए बेंच रहे फूलवाले फूल गूंध रहे॥

तंबोली बीड़े बांध रहे गंधियों की दूकानें तेल फुलेल अत्र अर्गजे की लपटों से महक रहीं और सुपारी वाले दूकानों में पुड़े बुन धनिये सुपारी के बांध कर लगाये हूए डिब्बे मअ़जूनों के आगे धर सुपारियां कतर रहे बिसाती हर रंग की जिन्स दूकानों में चुने हुए मोल गाहकों से कर रहे॥

चौक चौकोर बना हुआ मीना बाज़ार लगा हुआ तीसरे पहर को गुज़री लगी हुई अस्बाब तरह तरह का नया पुराना बेचने वाले बेच रहे और लेनेवाले मोल ले रहे गर्म बाज़ारी हर एक चीज़ की हो रही कटोरे हर तरफ़ बाज रहे॥

कहीं नाच कहीं राग कहीं भगत कहीं नक़्ल कहीं क़िस्सः हो रहा मअ़शूक़ बाज़ार में सैर कर्ते हुए आशिक़ पीछे पीछे फिर्ते हुए दिन रात यिह समां वहां रहता था बाग़ बाग़चे सैर ओ तमाशे को बने हुए दरख़्त मेवों से झूमते हुए और फूल क्यारियों में खिले हुए॥

तालाबों में कंवल फूल हुए बावलियों में पानी झलका हुआ हर एक कूए पर रहट चल्ता हुआ पनघट लगा हुआ और राजा के चौरासी ख़ास महल ऊंचे ऊंचे दर्वाज़े ख़ुश क़िताअ़ः चार दीवारियां सीधी खिंचीं हुयां चारों तरफ़ उन के बाहर अन्दर मकान अनूठे अनूठे बने हुए॥

कोठरियां दालान दर दालान बारहदरियां बालाख़ाने